62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 642 Participant Code: 129

विशय :- "रास्ते में मिली एक लड़की"

"रास्ते में मिली एक लड़की"

* उन्नीस सौ इक्यासी का साल ! *
रास्ते मे मिली एक लडकी ने मेरा दिल बहलाया। मे उसे नही जानता था मगर उसके बारे मे जानना ज़रूर चाहा। ना जाने कौन थी वह लड़की ? दिखने मे सीधी - सादी, भोली और मॉसूम थी। ओर तो ओर दिखने में काफ़ी प्यारी और सुंदर थी। जैसे ठंडी हवा खिलते फूलो को और पेड - पौधो को चूता है, उसी तरह उसने मेरे दिल को चुआ ! वह मेरे दिल में एक ऐसी जगह बनायी जहा चाहते हुए भी कोई नही आ सकता ! क्या ये जादू है ? ना जाने उसमे ऐसा क्या जादू था! मेरे दिल ने उसे चुना ! मगर क्यों यह मुझे पता नही।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

....घर से निकलते ही कुछ दूर चलते ही रास्ते मे मिली एक लड़की जिसने मेरा दिल जीत लिया! मैं उसके बारे में जानना चाहा। मैं उसके नज़दीक जाकर उससे पूछा की "हाय! तुम्हारा नाम क्या है? तुम क्या करती हो? तुम्हारा घर कहा है?" मेरे हर सवाल की जवाब उसने दिया मगर घर का कुछ पता नही चला। मैंने उससे फिर से पूछा कि "तुम्हारा घर कहा है और तुम कहा रहती हो?" फुसफुसाहट में तब्दील हुई उसकी आवाज़ से वे बोली :- "मेरा कोई घर नही है। और मेरा कोई अपना नही है सिर्फ एक माँ है जो मुझे अपनी बेटी ही ना समझती है" मैं आकांक्षा से उससे अपने माँ के बारे मे पूछा। मैं यह समझ गया था की वह बेचारी अंदर से टूटी हुई है। और उसकी दिल संघर्ष से भरा हुआ है। पर फिर भी वे हिम्मत के साथ बोलने के लिए तैयार हो गई। एक कुर्सी पे उसे बिठाकर मैं भी बैठ गया उसकी ज़िन्दगी के बारे मे

जानने के लिए । वह बोलने लगी ।

मेरी कोई अपने नही है । मैं एक पत्तर हूँ जिसे बच्चे आम तोड़ने के बाद फेंकते है । मैं एक नाजायस लड़की हूँ जिसे कोई नही चाहता । मैं एक नदि में बहती लकड़ी के तुकड़ा हूँ जो पानी के साथ नदि के हिसाब से चलती है । इसी तरह मेरे ज़िन्दगी में कोई लक्ष्य नही है । मैं सब कुछ किसमत में छोड़ी हूँ । मेरी माँ ..... वो माँ नही माँ की रूप में एक थूक है । मुझे ऐसा नही बोलनी चाहिए किंतु वो एक बुरी औरत है जिसने मुझे पैदा किया । मुझे शरम आति है कि मैं ने उसकी कोक से जन्म लिया । उसने मुझे पैदा ही सिर्फ किया है । उससे क्या होगा ? उसने एक माँ का फर्स नही निभायी । मैं जब ग्यारह साल की हुई तबी उसने मुझे किसी अनाथाशर्म में ले गयी और मुझे वहा छोड़ के गयी । मैं तो लुट गयी । मेरा क्या कसूर था?

"हर चीज़ की एक सीमा होती है। मगर......
उसने हर सीमा पार कर दी। कोई बात नहीं
है ये भी मेरी किस्मत थी। पर मुझे पता
चला की उसने दूसरी शादी की और वे सुख
से जी रही है। ऐसा कौन करता है ? फिर
बहुत सालों के बाद वे आई जब मैं उन्नीस
साल की थी। और उसने मुझसे कहा की 'बेटी
मैं आ गई अब तुम मेरे साथ चल सकती हो'
फिर कैसी भी करके मुझे वहाँ से ले जाया
गया। और उस घर मे मुझे काम करने के
लिए रखा की। मैं हर रोज़ मेहनत की फिर भी
मुझे वे हमेशा डाँटती थी। और आँखिर मैं
उसने मुझे पराया कर दि ! उसने मेरी शादी
करा दी वो भी एक बूढे से। मैं बेखुश थी।"
"वे अभी बेसहारा है। शायद मैं उसके मदद कर
पाता" मोहन ने मन ही मन में गीता के बारे
में सोचा। मोहन से गीता ने कहा "किसी
का विश्वास को तोड़ना तो बहुत आसान है
किंतु उसे बनाना बेहद कठिन भी।"......

गीता फिर बोलने लगी। "मैं जीते जाते एक ज़िन्दा लाश हूँ। फिर भी किस्मत ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। मेरा पति या बूढ़ा विराज ने मेरी ज़िन्दगी बरबाद कर डाला। वे शराब पीने लगा और रोज़ाना मुझे मारने लगा। पर क्यों मेरी कोई गलती भी नहीं थी फिर भी मैं ने सहा। सहने के भी एक सीमा होती है। और एक दिन उसने मुझे बिलकुल मेरे माँ जैसे बेघर बना दिया। मुझसे उसने तलाक के काग़ज़ पर हस्ताक्षर करवा कर ले लिए और मुझे आज़ाद किया। सबने मुझे दोषी मानने थे और बोलते थे "जैसी माँ वैसी बेटी"। इस बात मेरे दिल को चकनाचूर कर दिया। गले में बंधे हुई फांसी की रस्सी के तरह।" मोहन ने सोचा की "फूटी किस्मत! किस्मत का भी कोई भरोसा नहीं। पर ऊपर तो भगवान है। मेरे अनुसार वह तो अन्याय होने नहीं देते। ऊपर वाले पर भरोसा ज़ारी रखो वे तुम्हें कुछ ना कुछ ज़रूर देगा। कई लोगों को भगवान अंधी

और गम देते है। हमारी जिन्दगी एक सीखे जैसे है जिसका दो जगह, पन्ना होता है एक सुख और एक दुख का।" मोहन ने गीता को बहुत अच्छी तरह समझाया और उसे संभाला। गीता की किसमत खराब थी। किसमत ने उसके साथ ऐसा खेल खेला जो कभी बदल ना सका। वह आज़ादी सपने देखने वाली थी। बादल से जैसे बारिश आती है उसी तरह मोहन की विशाल दिल को देखकर गीता की आँखों से आँसू आया। फिर वे दोनो हमेशा मिलकर बात करते थे। आपस में जानने लगे और दोस्त बन गये। बहुत महीनो के बाद वे फिर से एक सड़क पर मिले और इस मुलाकात गहरा रिशता मिलाने का था। मोहन ने गीता से अपना हाथ शादी के लिए माँगा। इस बार उसने कहा कि "मैं तुम्हे चाहता हूँ और मैं तुमसे बेहद, बेपनाह प्यार करता हूँ।" गीता बेहद खुश हुई वो धन्य हो गई। उसने मोहन से हाँ कहा। वे दोनो रजिस्टर ऑफीस जाकर शादी

किए। उनका ज़िन्दगी की पहली शुरुवात था। वे खुशी-खुशी जीने लगे। मोहन ने उससे वादा किया की वे उसे कभी अकेला नही छोड़ो। वे खुशी से जीते-जीते साल बीत जाऐ। यह गीता और मोहन का सुनेहरा ज़िन्दगी ही है।

यह रास्ते मे मिली वो लड़की है, जो अपने बचपन खोकर भी, अपने माँ की छिपी हुई हरकत मे ज़िन्दगी काटकर भी आज सुख के साथ मोहन के लिए जी रही है। इनसान जितने भी ऊंचाई मे आते हुऐ भी उन्हें अपना कल को भूलना नही चाहिए। यही हकीकत है। यही सच है। उसकी ज़िन्दगी वे सुख के साथ जी रही है।

——————